HAL open science

पूर्वग्रह का मीडिया

Pramod Ranjan

► To cite this version:

Pramod Ranjan. पूर्वग्रह का मीडिया. जनसत्ता, 2014, pp.7. ⟨10.17613/5ymj-qg55⟩. ⟨hal-04475748⟩

HAL Id: hal-04475748

https://hal.science/hal-04475748v1

Submitted on 23 Feb 2024

HAL is a multi-disciplinary open access archive for the deposit and dissemination of scientific research documents, whether they are published or not. The documents may come from teaching and research institutions in France or abroad, or from public or private research centers.

L'archive ouverte pluridisciplinaire HAL, est destinée au dépôt et à la diffusion de documents scientifiques de niveau recherche, publiés ou non, émanant des établissements d'enseignement et de recherche français ou étrangers, des laboratoires publics ou privés.

Distributed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

पूर्वग्रह का मीडिया

प्रमोद रंजन

समांतर

बाईस अप्रैल को दोपहर में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कुछ पत्रकारों ने दिल्ली में हरियाणा भवन पर भगाणा बलात्कार पीड़ितों के प्रदर्शन का बहिष्कार कर दिया था। लेकिन बहिष्कार करने वाले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संस्थानों के दफ्तर से उसी दिन शाम आंदोलनकारियों को फोन आया कि वे आंदोलन का 'बहिष्कार' नहीं कर रहे, खबर दिखाएंगे। शायद उनका फैसला कुछ वेबसाइटों पर 'बहिष्कार' की खबर प्रसारित होने के कारण हुआ।

पिछले आठ दिनों से दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरने पर बैठे भगाणा के लगभग सौ गरीब दलित परिवारों की महिलाओं, पुरुषों के बच्चों के साथ दिल्ली आने के पीछे क्या मनोविज्ञान रहा है? उन्हें लगता है कि यहां का मीडिया उनका दर्द सुनाएगा और दिल्ली उन्हें न्याय दिलाएगी। यही कारण था कि वे अपनी किशोरावस्था को पार कर रही सामूहिक बलात्कार की पीड़ित चारों लड़कियों को साथ लेकर आए। चेहरा ढक कर घर से बाहर निकलने वाली इन महिलाओं को किस मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ रहा होगा, यह समझना मुश्किल नहीं है। भगाणा के चमार और कुम्हार जाति के लोग पिछले दो साल से जाटों द्वारा किए गए सामाजिक बहिष्कार के कारण अपने गांव से बाहर रहने को मजबूर हैं। धानुक जाति के लोगों ने बहिष्कार के बावजूद गांव नहीं छोड़ा था। ये चार बच्चियां, जिनमें दो सगी बहनें हैं, इन्हीं परिवारों की हैं। उनका अपहरण कर दो दिन तक लगभग एक दर्जन लोगों ने बलात्कार किया। तेईस मार्च को हुई इस घटना की एफआइआर, धारा 164 का बयान, मेडिकल रिपोर्ट सब मौजूद है।

जानता हूं कि ऊंची कही जाने वाली जातियों में पैदा हुए पत्रकार साथी एक बार फिर कहेंगे कि हमने उनकी खबर नहीं रोकी। इस आंदोलन में जितनी भीड़ थी, उस अनुपात में उन्हें जगह दी। लेकिन साथी! क्या आपका दायित्व इतना भर है? क्या मीडिया का समाज के वंचित तबकों के प्रति कोई अतिरिक्त नैतिक दायित्व नहीं बनता? 2012 में इसी जंतर-मंतर पर अण्णा हजारे के आंदोलन-स्थल के बगल में ही भगाणा से बहिष्कृत दलित-पिछड़े भी सैकड़ों की संख्या में धरना पर बैठे थे। लेकिन मीडिया ने उनकी अनदेखी की। अगर तब इन्हें मीडिया में जरूरी तवज्जो मिली होती तो शायद बलात्कार की यह घटना नहीं हुई होती।

खैर, जब भगाणा की इन पीड़ित बच्चियों और उनके साथियों को धरने पर बैठे चार दिन हो गए और आपने कोई कवरेज नहीं दी तो उन्हें लगा कि शायद निर्भया को न्याय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की वजह से मिला। वे उन्नीस अप्रैल को जेएनयू पहुंचे और वहां के विद्यार्थियों के सामने गिड़गिड़ाए। बाईस अप्रैल को जेएनयू छात्र संघ (जेएनएसयू) ने जंतर-मंतर और हरियाणा भवन पर जोरदार प्रदर्शन किया। सभी नामी-गिरामी टीवी चैनलों को सूचना दी गई थी। लेकिन पहुंचे सिर्फ हरियाणा के स्थानीय चैनल और उन्होंने भी आंदोलन के बहिष्कार की घोषणा कर आंदोलनकारियों के मनोबल तोड़ा।

हरियाणा में कांग्रेस की सरकार है। क्या यह आपका दायित्व नहीं था कि आप कांग्रेस के बड़े नेताओं से पूछते कि आपके राज में दलित-पिछड़ों के साथ यह क्या हो रहा है? आप नरेंद्र मोदी के 'पिछड़ावाद' की लहर पर सवार भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से सवाल करते कि पिछले चार-पांच सालों से हरियाणा से दलित-पिछड़ी जाति की महिलाओं के साथ बलात्कार की खबरें आ रही हैं, लेकिन आपकी राजनीति सिर्फ एक खास दबंग जाति को खुश रखने पर ही क्यों टिकी हुई है। अरविंद केजरीवाल हिसार जिले के हैं, जहां भगाणा और मिर्चपुर गांव हैं। उनकी पार्टी के नेता कहते नहीं थकते कि दिल्ली में उन्हें सबसे अधिक वोट गरीबों, दलित-पिछड़ों ने दिया। लेकिन क्या आपने कभी 'आम आदमी पार्टी' को हरियाणा के दलितों के लिए आवाज उठाते देखा? दिल्ली में बात-बात पर आंदोलन करने वाला 'आप' का कोई भी नेता क्यों जंतर-मंतर नहीं जा रहा? साथी, अब भी समय है। भगाणा की पीड़ित दलित बच्चियां जंतर-मंतर पर आपकी राह देख रही हैं।

(facebook.com/janvikalp)